The Research Dialogue

An Online Quarterly Multi-Disciplinary Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-04, Issue-02, July-2025
www.theresearchdialogue.com

नारी उत्थान में सावित्रीबाई फुले का योगदान

प्रतिभा वर्मा
शोधार्थिनी
शिक्षाशास्त्र विभाग
श्री एल0 बी0 एस0 पी0 जी0 कॉलेज, गोण्डा

डॉ0 ओम प्रकाश यादव
शोध निर्देशक
शिक्षाशास्त्र विभाग
श्री एल0 बी0 एस0 पी0 जी0 कॉलेज, गोण्डा

सारांश:

शक्तिस्वरूपा सावित्रीबाई फुले जी ने समाज में शोषित, वंचित और पीड़ित स्त्री समाज के उत्थान के लिए 'महिला सेवा मंडल' का गठन, बाल हत्या प्रतिबंधक गृह की स्थापना, प्रथम कन्या पाठशाला व अंतरजातीय विवाह पद्धति का शुभारंभ जैसे अनेक कार्य किए। माँ सावित्रीबाई फुले जी ने नारी समाज को न केवल मनुस्मृति की बंदिशों से मुक्त कराया बल्कि उन्हें नारी शिक्षा, नारी स्वतंत्रता और नारी जागृति का मूल मंत्र भी दिया। नारी समाज के उत्थान के प्रति माँ सावित्रीबाई फुले जी क्रांतिकारी विचार रखती थीं। अपने ओजस्वी क्रांतिकारी विचारों के कारण ही उन्हें प्रथम दलित स्त्री समाज की महिला नेत्री एवं दलित स्त्री समाज की प्रथम दिग्दर्शिका के रूप में भी जाना जाता है। सावित्रीबाई फुले जी ने सामाजिक कुरीतियों एवं धार्मिक आडंबरों से नारी समाज को मुक्ति दिलाकर एक नई दिशा प्रदान की। समय-समय पर सावित्रीबाई फुले जी अपनी कविताओं और अपने ओजस्वी भाषणों के द्वारा महिला समाज को उनके अधिकारों से परिचित कराया करती थीं।

कुंजी शब्द *- सावित्रीबाई फुले, सहभागिनी, मंत्रोच्चारण, नारी जागृति, दिग्दर्शिका, अंतरजातीय विवाह।*

अतीत काल से ही भारतीय संस्कृति में स्त्रियों की अपेक्षा पुरुषों को अधिक महत्व दिया गया है। मनुवादी ग्रंथों में तो स्त्रियों के अधिकारों को पूरी तरह से नष्ट करके उसे एक परजीवी के रूप में प्रदर्शित किया गया है। ब्राह्मणवादी समाज में पंडा-पुरोहित एवं धर्मगुरु भी इसी बात को दोहराते रहे हैं कि नारी परावलम्बी है वह पिता, पति अथवा भाई के सहारे के बिना जी ही नहीं सकती।[1] तत्कालीन समाज में स्त्री शिक्षा का घोर अभाव था संपत्ति में स्त्रियों को ना के बराबर अधिकार था। दहेज प्रथा, सती प्रथा, बाल-विवाह जैसी कुप्रथाओं का सीधा प्रभाव महिलाओं पर पड़ता था। पंजाब में पति के मरने के बाद देवर के साथ

शादी कर दी जाती थी ताकि सम्पत्ति घर में ही रहे चाहे भाभी-देवर की उम्र में कितना ही फासला क्यों ना हो।[2] ब्राह्मणों द्वारा रचित सभी धर्म ग्रंथों में स्त्री शोषण की हजारों प्रथाएँ थीं जिन पर समाज के अज्ञानी अशिक्षित वर्ग आँख मूंदकर विश्वास करते थे। ज्योतिबा व सावित्रीबाई ने मिलकर नारी समाज की अनेक कुरीतियों के खिलाफ आवाज उठाई महिलाओं में शिक्षा की अलख जलाने के साथ-साथ दोनों ने मिलकर तत्कालीन अनेक सामाजिक बुराइयाँ जिन्होंने नारी जीवन को जीते जी नारकीय बना दिया था उन पर कड़ा प्रहार किया।[3] सावित्रीबाई फुले और ज्योतिबा फुले नारी स्वतंत्रता और उनके अधिकारों को उन्हें दिलाने के लिए अनेक परिश्रम किये।

माँ सावित्रीबाई के समय में व उससे हजारों वर्षों पहले स्त्रियों की स्थिति अति दयनीय थी। ब्राह्मणवादी युग में स्त्रियों को केवल एक दासी के रूप में समझा जाता था। ब्राह्मणवादी ग्रन्थों में महिलाओं को एक दीन-हीन-परजीवी के रूप में दिखाया गया है। मनुवादी ग्रंथों में स्त्रियों के प्रति कहा गया है कि-

नास्तिक स्त्री मा पृथग्यज्ञो न व्रतो नाप्युपोषितम्।

पतिः शुश्रूषते येन तेन स्वर्गे महीयते।।[4]

अर्थात्- "स्त्री के लिए अलग से यज्ञ, व्रत अथवा उपवास का नियम नहीं है पति की सेवा सुश्रुषा से ही उसे स्वर्ग प्राप्त होता है।"

ऐसी कुण्ठित विचारधारा से नारी शक्ति को मुक्ति दिलाने के लिए माँ सावित्रीबाई फुले जी ने अथक् प्रयास किए बहुमुखी प्रतिभा की धनी सावित्रीबाई फुले अपने नारी कल्याण सम्बन्धी उपयोगी विचारों को कविता व लेखों के माध्यम से व्यक्त करती थीं।[5]

माँ सावित्रीबाई फुले जी के ही अथक् प्रयासों का परिणाम था कि तत्कालीन समाज में महिलाएँ खड़ी होकर बोलने लगीं, प्रहार करने लगीं, यह सब केवल और केवल माँ सावित्री की प्रेरणा के कारण सम्भव हुआ है। इसलिए उन्हें स्फूर्ति नायिका, ज्ञानदा और युगस्त्री के रूप में जाना और माना जाता है।[6] सावित्रीबाई फुले जी ने स्त्री उद्धार के लिए अनेक कार्य किए जिनमें प्रमुख कार्यों का उल्लेख निम्नवत् है-

सती प्रथा का विरोध-

तत्कालीन पुरुष प्रधान संस्कृति में एक दलित स्त्री सती प्रथा के खिलाफ इतना बड़ा आंदोलन कर देगी यह किसी ने कभी सपने में भी नहीं सोचा था। एक बार की बात है कि लहुजी बुवा की सबसे छोटी पुत्री करंजे गाँव में ब्याही थी। उसका पति बंधुआ मजदूर था, जो एक दिन चेचक की चपेट में आ गया और मर गया। तब लहुजी बुवा की विधवा पुत्री का पाखंडी पुरोहितों ने षड्यंत्र रचकर उसे सती करने का जाल बुन दिया। तब देशभर में सती-प्रथा निरोधक कानून लागू था। जब सावित्रीबाई को यह बात गुप्त रूप से पता चली तो उन्होंने उसी क्षण तांगा मंगवाया और अपने साथ कई सहयोगियों को लेकर वहाँ पहुँच गई जहाँ चिता तैयार हो चुकी थी। ज्योतिबा फुले को वे यह संदेश पहले ही पहुँचा चुकी थीं और उन्हें समय रहते सहायता पहुँचा देने की बात कही थी। जिस प्रकार सिंहनी बिफरती है ठीक उसी प्रकार सावित्रीबाई ने उस कुकृत्य में मंत्रोच्चारण करने वाले धर्माचार्यों

को खरी-खोटी सुनाई। तर्क-वितर्क हुए और स्थिति बड़ी जटिल हो गई। एक स्त्री के सामने धर्म पुरोहित पराजित होना नहीं चाहते थे उन्होंने विधवा के मुँह से कहलवा दिया कि वह स्वेच्छा से सती हो रही है परंतु सावित्रीबाई ताड़ गई कि उस समय वह स्त्री किसी नशे के प्रभाव में थी। वास्तव में ऐसा किया जाता था कि सती होने वाली विधवा को कई दिन पूर्व से ही भाँग घोट कर पिलाई जाती थी, जिससे उसका मानसिक संतुलन बिगड़ जाता था। सावित्रीबाई ने भांप कर विधवा को झकझोर डाला। उसी समय ज्योतिबा फुले पुलिस लेकर पहुँच गए और धर्माचार्य वहाँ से नौ दो ग्यारह हो गए।[7]

महिला सेवा मंडल का गठन-

माँ सावित्रीबाई फुले जी ने अपने पति ज्योतिबा फुले के मार्गदर्शन से महिला सेवा मंडल का गठन किया जिसमें महिलाओं की समस्याओं का निराकरण किया जाता था। इस संस्था द्वारा महिलाओं की समस्याओं को दूर करके उन्हें उनके अधिकारों से परिचित कराया जाता था। इस संस्था द्वारा महिला सुधार के कार्य किए जाते थे। यह भारत की पहली महिला सेवा संस्था थी। इस संस्था की अध्यक्षा थी पुणे के जिलाधीश की पत्नी मिसेज ई. सी. जोन्स और सचिव सावित्रीबाई फुले थीं। इस संस्था की ओर से दिनांक 14 जनवरी 1852 को तिलकूट वितरण समारोह का आयोजन किया गया था। इस समारोह की निमंत्रण पत्रिका निम्नानुसार थी-

"पुणे जिलाधीश की मेम साहिबा मिसेज जोन्स की अध्यक्षता में दिनांक 14 जनवरी 1852 को संक्रांति के त्यौहार के उपलक्ष्य में तिलकूट वितरण समारोह आयोजित किया गया है अनुरोध है कि सभी महिलाएं अपनी कन्याओं तथा बहुओं समेत समारोह में शाम के 5:00 बजे उपस्थित रहें समारोह में आने वाली महिलाएं चाहे वह किसी भी जाति या धर्म की हों, एक ही दरी पर बैठेंगी और बिना पक्षपात के सभी को समान रूप से तिलकूट वितरण किया जाएगा।"[8] माँ सावित्रीबाई की निष्काम भावना से प्रेरित होकर अनेक महिलाएं उस समारोह में सम्मिलित हुईं।

फुले दंपति द्वारा विधवा विवाह योजना-

धार्मिक आडम्बरों से ग्रसित समाज में विधवाओं का जीवन अतिदयनीय माना जाता था प्रारंभ में जहाँ विधवा महिलाओं को अपने पति के साथ सती होना पड़ता था। जब इस कुप्रथा का अंत हमारे समाज सुधारकों द्वारा किया गया तो विधवा महिलाओं की स्थिति सती होने से और ज्यादा दयनीय हो गई। उन्हें समाज में कोई देखना पसंद नहीं करता था। सुबह-सुबह किसी विधवा स्त्री का मुँह देखना लोग अपशकुन मानते थे और ज्यादातर स्त्रियों को अपने ही घरों में सम्मान नहीं मिलता था। उन्हें अपने घरों में एक दासी के समान जीवन जीना पड़ता था। लोग अपने घरों में होने वाले माँगलिक कार्यक्रमों में किसी विधवा स्त्री का आना अपशकुन मानते थे।

माँ सावित्रीबाई ज्योतिबा के प्रत्येक कार्य में सहभागिनी थीं उन्होंने भी विधवा पुनर्विवाह पर बल दिया किसी पुरुष द्वारा महिला को समझाना कठिन है परंतु एक महिला द्वारा दूसरी महिला को समझाना आसान है। यह बात ज्योतिबा को भली-भाँति पता थी

इसलिए महिलाओं को समझाने के लिए तथा उनको प्रेरित करने के लिए सावित्रीबाई को ही आगे रखते थे। इसलिए सावित्रीबाई ने धीरे-धीरे 'विधवा पुनर्विवाह कार्यक्रम' संचालित किया और पुरुष समाज के दम्भ को ध्वस्त कर दिया।[9]

विधवा मुंडन विरोधी कार्य-

समय-समय पर भारतीय इतिहास में ऐसी कई कुप्रथाओं ने भारत देश को कलंकित किया है जिनका उद्देश्य धार्मिक रीति-रिवाजों की आड़ में मानव सभ्यता को दूषित करना था। ऐसी ही धार्मिक कुप्रथाओं में विधवा मुंडन की कुप्रथा थी जिसने विधवाओं के जीवन को और भी अधिक दयनीय बना दिया था। एक ओर जहाँ पति के मर जाने पर पत्नी को सती होना पड़ता था वहीं दूसरी ओर उसका समाज के मध्य मुंडन भी कर दिया जाता था।

क्रांतिकारी समाज सुधारकों में फुले दंपति की समाज सुधारक अग्नि चारों ओर फैल उठी थी उन्होंने इस कुप्रथा के खिलाफ आवाज उठाने का निश्चय किया फुले जी ने इस कुप्रथा का विरोध करते हुए कहा कि- "यह किस दुनिया का न्याय है कि पति के मरते ही और पति के शव के पाँव का अंगूठा अपने हाथ में लेकर हज्जाम के हाथों अपना सर मुंडवा ले, तन पर पड़े हुए सभी गहने बूढ़े ससुर के हाथ में रखकर स्वयं अपने हाथों तुलसी की माला पहने जड़वत हो जाए, अपनी सारी उम्र तुच्छ कामों में लगा दयनीय जीवन बिता दे।"[10]

माँ सावित्रीबाई ने अपने पति के प्रत्येक सामाजिक कार्यों में उनकी परछाईं बनकर सदैव उनके साथ खड़ी रहीं वे महिलाओं की समस्याओं से भली-भाँति परिचित थीं इसलिए वे अपने पति से महिला समस्याओं पर निरंतर बातचीत किया करती थीं। अपनी पत्नी की प्रसंशा करते हुए ज्योतिबा फुले जी कहते हैं "मैं अपने जीवन में जो कुछ भी कर सका, उसके लिए मेरी पत्नी कारणीभूत हैं।"[11]

अंतरजातीय विवाह पद्धति का शुभारंभ-

रूढ़िवादी समाज में अंतरजातीय विवाह कराना एक कठिन कार्य था। अंतरजातीय विवाह से उत्पन्न संताने अशुभ व गुणहीन मानी जाती थीं। शूद्र वर्ण की स्त्री किसी उच्च वर्ण के व्यक्ति से विवाह नहीं कर सकती थी। यदि उच्च वर्ण का कोई भी व्यक्ति शूद्र वर्ण की स्त्री से विवाह करता है तो मनुस्मृति के अनुसार उसे कभी भी स्वर्ग सुख की प्राप्ति नहीं हो सकती जैसा कि मनुस्मृति के एक श्लोक में कहा गया है कि "शूद्र स्त्री का वरण करने वाले ब्राह्मण को कभी स्वर्ग की प्राप्ति नहीं होती उसके हाथ से देव तथा पितर अन्न ग्रहण नहीं करते। वह धर्म-कर्म व अतिथि सेवा से भी वंचित हो जाता है।[12]

माँ सावित्रीबाई फुले ने इस विषय में गहन विचार-विमर्श करके समाज में अंतरजातीय विवाह पद्धति का शुभारंभ करने का निर्णय लिया। फुले दंपति द्वारा किए गए इस कार्य का ब्राह्मण समाज ने घोर विरोध किया। ज्योतिबा फुले व माँ सावित्रीबाई फुले किसी भी विषम परिस्थिति से डर कर भागने वाले नहीं थे। उन्होंने सर्वप्रथम विधवा ब्राह्मण महिला की संतान को गोद लिया। उसका पालन पोषण किया तथा उसे उच्च कोटि की शिक्षा प्राप्त करा के 4 फरवरी 1889 को यशवंत का हड़पसर के निवासी ज्ञानबा कृष्णराय ससाणे की पुत्री राधाबाई के साथ विवाह कराया जो महाराष्ट्र का पहला अंतरजातीय विवाह था। माँ

सावित्रीबाई फुले जी ने सत्यशोधक समाज के तर्कों द्वारा अपने विरोधियों का मुँह हमेशा-हमेशा के लिए बंद कर दिया तथा माँ सावित्रीबाई जी के इस छोटे से प्रयास ने समाज में अंतरजातीय विवाह पद्धति की नींव डाली।

माँ सावित्रीबाई फुले जी ने स्त्रियों को धार्मिक, सामाजिक कुप्रथाओं से मुक्ति दिलाकर उन्हें विकास के पथ का पथिक बनाया। समग्र मानव कल्याण की भावना से प्रेरित सावित्रीबाई जी के ऐसे उदारवादी कार्यों का समाज सदैव ऋणी रहेगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची-

1- बौद्ध, शांतिस्वरूप, (2022) क्रान्ति ज्योति सावित्रीबाईफुले की अमर कहानी, सम्यक प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या 51

2- पाखरे सुषमा, (2022) युगस्त्री सावित्रीबाई फुले जीवन दर्शन, सम्यक प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या 7

3- रामबाबू ज्योति, सामाजिक क्रांति के अग्रदूत, महात्मा ज्योतिबा फुले, पृष्ठ संख्या 33

4- स्वामी,दर्शनानन्दसरस्वती, (2019) मनुस्मृति, पुस्तक मंदिर,मथुरा,5/158

5- एम.जी. माली, (2005) क्रांति ज्योति सावित्रीबाई फुले, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या 18

6- पाखरे सुषमा, (2022) युगस्त्री सावित्रीबाई फुले जीवन दर्शन, सम्यक प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या 37

7- कुमारी सुशीला, (2025) सामाजिक क्रांति की वाहक सावित्रीबाई फुले, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या 88

8- आचार्य सूर्यकान्त भगत, (2020) ज्ञानज्योती सावित्रीबाई फुले और उनकी काव्य सम्पदा, सुधीर प्रकाशन, वर्धा, पृष्ठ संख्या 11

9- कुमारी सुशीला, (2025) सामाजिक क्रांति की वाहक सावित्रीबाई फुले, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या 103

10- एल0 जी0 मेश्राम 'विमलकीर्ति', महात्मा ज्योतिबा फुले रत्नावली, खण्ड II, पृष्ठ संख्या 50

11- आचार्य सूर्यकान्त भगत, (2020) ज्ञानज्योती सावित्रीबाई फुले और उनकी काव्य सम्पदा, सुधीर प्रकाशन, वर्धा, पृष्ठ संख्या 6

12- स्वामी,दर्शनानन्दसरस्वती, (2019) मनुस्मृति, पुस्तक मंदिर,मथुरा, 3/18

This is an Open Access Journal / article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License CC BY-NC-ND 3.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited. All rights reserved

Cite this Article:

प्रतिभा वर्मा और डॉ0 ओम प्रकाश यादव,"नारी उत्थान में सावित्रीबाई फुले का योगदान" *The Research Dialogue,* An Online Quarterly Multi-Disciplinary Peer-Reviewed & Refereed National Research Journal, *ISSN: 2583-438X (Online), Volume 4, Issue 2, pp-319-323, July 2025. Journal URL: https://theresearchdialogue.com/*

THE RESEARCH DIALOGUE

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed & Refereed National Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-04, Issue-02, July-2025
www.theresearchdialogue.com
Certificate Number July-2025/31
Impact Factor (RPRI-4.73)

Certificate Of Publication

This Certificate is proudly presented to

प्रतिभा वर्मा और डॉ0 ओम प्रकाश यादव

for publication of research paper title

"नारी उत्थान में सावित्रीबाई फुले का योगदान"

Published in 'The Research Dialogue' Peer-Reviewed / Refereed Research Journal and E-ISSN: 2583-438X, Volume-04, Issue-02, Month July, Year-2025.

Dr. Neeraj Yadav
Executive Chief Editor

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Editor-in-chief

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.theresearchdialogue.com

INDEXED BY